श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ८

जनवरी २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... यह जडता का मार्ग है।
२. पं. जगच्चंद्रगणि ने आचार्य..... की सेवा में रहकर जिनागमो का विशाल और तलस्पर्शी ज्ञान संपादन किया।
३. केवली समुद्घात के पश्चात केवली भगवन्त को..... नाम का शुक्लध्यान होता है।
४. जैन श्रमण परंपरा में ..... का नाम अेक महान क्रियोध्दारक के रुप में आता है।
५. शांकभरी नगरी में किसी भी कारण से कुपित हुई शाकिनी ने ..... का उपद्रव फैलाया।
६. जीव की शिव-यात्रा..... कारणों से ही सफल बनती है।
७. मुनि यशोविजयजी ने सौ ग्रंथो की रचना की इसलिये काशी के विद्वानो ने उन्हें .....और न्यायाचार्य ये दो सम्मान भरे बिरुद दिये।
८. नारकी के जीव कभी भी अेकेन्द्रिय या ..... में नहीं जाते।
९. सर्व देव समुहों के स्वामीओं से विशिष्ट प्रकार से पूजे गये..... और विश्व के लोगों का रक्षण करने में तत्पर ऐसे श्री शांतिनाथ को सदा नमस्कार हो।
१०. केवलज्ञानी भगवंत केवली समुद्घात करते हैं तब पहले और आठवे समय ..... योग वाले होते हैं।
११. जीव जब.....को जानता है समझता है तब उसकी आज्ञा पालन के लिये उत्कृष्ट भाव होते है।
१२. आ. पार्श्वचंद्रसूरि केवल प्रचारक ही नहीं थे ..... भी थे।
१३. जब जीवकी भवस्थिति का परिपाक होगा तभी जीव..... में प्रवेश करेगा।
१४. हमें यदि शुभगति चाहिये तो ..... करने ही पडेगें।
१५. पृथ्वीकायादि दस पदों में से निकले हुए जीव..... और वायुकाय में उत्पन्न होते है।
१६. नियतिवाद की प्ररुपणा करके मंखलीपुत्र गौशालाने..... मत का प्रवर्तन किया।
१७. नाममंत्र वाले वाक्य प्रयोगों से तुष्ट होकर..... लोगों का हित करती है।
१८. ओष्ठ्य व्यंजन का उपयोग करे बगैर करने का ..... वादमे पू. यशोविजय जी ने खंभात में विजय की वरमाला का वरण किया था।
१९. आत्मा स्वस्वभाव में रहे हुए आत्म प्रदेशों को सात कारण से पर स्वभाव में परिणमाता है उसे..... कहते हैं। १५
२०. श्री.....की परंपरा में श्री जगच्चंद्र सूरि ४४वें पट्टधर थे।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. किसके स्वीकार से जीव पाप के पथ पर प्रयाण करता है ?
२. महोपाध्याय यशोविजयजी म. का समाधि मंदिर कहाँ है ?
३. श्री मानतुंग सूरि ने कौनसा मंत्रयुक्त चमत्कारी स्तोत्र बनाया ?
४. केवलज्ञान को व्यवहार से किसकी उपमा दी है ?
५. साधक का मुख्य लक्ष क्या प्राप्ति का है ?
६. पू. यशोविजयजी म. ने गंगा किनारे किसका जाप किया ?
७. केवल कार्मण काय योग हो तब केवली कैसे होते हैं ?
८. योगीओं के स्वामी कौन है ?
९. मोक्ष प्राप्ति के लिये अनुकुल काल कौन सा है ?
१०. समुद्घात के सातवे समय ने क्या संहरित करता है ?
११. जीव को गति किसके अनुसार मिलती है ?
१२. नियतिवाद को मानने वाले किसे मानते नहीं ?
१३. कैसी आराधना उनके जीवन में गुंथी हुई थी ?
१४. तीर्थंकर परमात्मा कैसी आयुष्य वाले होते है ? १०
१५. सन्मति तर्क के रचयिता कौन हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) समन्वित २) हस्तस्थ ३) मज्झे ४) सेसेस ५) जंति ६) लभते ७) वेद्यते ८) अमर ९) अेवम् १०) उववज्जंति ११) वपुर्योग १२) नुता १३) दग १४) महीपीढ १५) तहेव १६) कृततोषा १७) कृत्वा १८) भास्कर १९) मन्थान २०) विवज्जिया

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कर्मक्षय	१) वीश स्थान	६) पृथ्वीकायादि दस पद में	६) अतिशय ग्यारह
२) छद्मस्थ साधु का मन स्थिर	२) तपागच्छ प्रवर्तक	७) केवली समुद्घात	७) भाग्य
३) नियति	३) वनस्पतिकाय	८) वीरदत्त	८) पर्याप्त बादर अपकाय
४) तीर्थंकर नामकर्म	४) नाडूल	९) श्रीजगच्चंद्रसूरि	९) आठ समय
५) देवता की गति	५) आत्मवीर्य	१०) कषाय क्षय	१०) ध्यान

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कितने महिने से अधिक आयुष्य वाले केवलज्ञानी नियमा समुद्घात करते हैं ?
२. देवकृत अतिशय कितने हैं ?
३. जिसके अंत में "रहस्य" शब्द है ऐसे महोपाध्याय के ग्रंथ कितने ?
४. कितने कारण से जीव समुद्घात करता है ?
५. श्री पार्श्वचंद्रसूरि का दीक्षा पर्याय कितने वर्ष का था ?
६. वीरा दिशापाल ने कितने अंग टीका सहित लिखवायें ?
७. उनावा में सोनी के कितने घरों ने जैनधर्म स्वीकारा ?
८. श्री जगच्चंद्रसूरि ने कितने वर्ष आयंबिल तप की आराधना की ?
९. इस अभ्यास में शांतिनाथ भगवान के कितने विशेषण बताये हैं ?
१०. श्री जगच्चंद्रसूरि ने आघाटपूर में कितने दिगंबराचार्य के साथ वाद किया था ।

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. काल और स्वभाव अनुकुल हो तो काल की परिपक्वता के बिना भी कार्य सिद्ध होता है ।
२. पार्श्वनाथ भगवान समग्र भय समुह का नाश करने वाले हैं ।
३. आत्मप्रदेश फैलाये जाय तो कर्म की स्थिती अल्प हो जाती है ।
४. जैन श्रमण परंपरा में श्री पार्श्वनाथ सूरि का नाम एक महान क्रियोद्धारक के रुप में आता है ।
५. पृथ्वीकायादि दस पदो में देव और नारकी का समावेश होता नहीं ।
६. महोपाध्याय यशोविजयजी म. ने "पूजा शतक", "विधिशतक", "उपदेश सार" आदि ग्रंथ रचे हैं ।
७. नारकी के जीव बहुत काल एकेन्द्रिय में भ्रमण कर फिर मनुष्य बनते हैं ।
८. सिर्फ शुद्ध भावना से ही संतोष मान बैठे, उनकी भाव शुद्धि सच्ची हो ही नहीं सकती ।
९. विजया देवी लाभ करने वाली हैं, इसलिये भी यहाँ प्रसंगानुसार स्तवित की गई है ।
१०. धर्म देशना देने मे अग्लान बनकर प्रभु तीर्थंकर नाम कर्म भोगते हैं ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. आत्मवंचना से अपनी आंख में धूल डाली जा सकती है ।
२. सूरिजी तपस्वी, ब्रह्मचारी और मंत्रसिद्ध महापुरष थे ।
३. स्वाध्याय और कायोत्सर्ग उनकी प्रमुख साधना थी ।
४. गर्भ तिर्यंच और मनुष्य सातों नरको में उत्पन्न होते हैं ।
५. केवलज्ञान से समस्त लोक और अलोक भी प्रकाशित होता है ।
६. जीव अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण कर रहा है और करेगा ।
७. उस समय मुनिसमुदाय में कालवश, क्रिया शिथिलता व्याप्त हो गयी थी, वो दूर करने वे चिंतित और उत्सुक थे ।
८. जिन याने सामान्य केवली उनमें इन्द्र समान वह "जिनेन्द्र" ।
९. पुरुषार्थ की गौणता प्रायः शुभकार्यो की ओर है, अशुभकार्यो की ओर नहीं ।
१०. शांति के अधिपति ऐसे शांतिनाथ भगवान को नमस्कार हो नमस्कार हो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्री शांतिनाथ प्रभु की विशेषतायें । २) पृथ्वीकायादि दस पदो और उनकी गति आगति । ३) केवली समद्घात
४. महोपाध्याय यशोविजयजी की ज्ञान साधना ५) कार्यसिद्धि के आखरी तीन कारण ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com